धरती हमारी माता है।

प्रगति सैनी
रुड़की।

एक माँ वो है जिसने हमें जन्म दिया है। हमारा पालन–पोषण करती है। दूसरी माँ वो है जिसे दुनिया धरती माता के नाम से जानती है। यह हमें खाना देती है, रहने के लिए जगह देती है। यूं कहें कि दुनिया में जितनी चीजें दिखती हैं, सब कुछ इसी 'माँ' की देन हैं।

हमारी जन्म देने वाली माँ यदि बीमार पड़ जाती है, तो हमारी नींद उड़ जाती है। हम उसके इलाज के लिए दिन–रात एक कर देते हैं, जबकि इस माँ ने दो–चार ही पुत्र–पुत्रियों को जन्म दिया है। लेकिन धरती माता जिसके कई करोड़ बेटे हैं। पुकारती है। लेकिन कोई संभालने वाला नहीं है।

आज हम इस माँ के दुश्मन बन गए हैं। हरे–भरे वृक्ष काट रहे हैं। इसके गर्भ में रोज खतरनाक परीक्षण कर रहे हैं। इतना जल बर्बाद किया कि कई हिस्से जलविहीन हो गए हैं। धरती माता के बचाव के लिए सबको आगे आना चाहिए। वरना हमारे पास पछताने के अलावा कुछ नहीं बचेगा। सन् 1970 से 22 अप्रैल को पहली बार पृथ्वी दिवस मनाया गया। तत्पश्चात यह सिलसिला साल–दर–साल जारी है।

आइए हम शपथ लें कि अपनी धरती माता को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। पौधारोपण को खुद के रूटीन में शामिल करेंगे । इसके लिए औरों को भी प्रेरित करेंगे। पॉलीथिन का इस्तेमाल नहीं करेंगे। कागज का इस्तेमाल कम से कम करेंगे। इससे कई बांस के पेड़ कटने से बच जाएंगे। सूख रहे तालाब, कुएं को फिर से जीवित करेंगे। ब्रश करते समय बेसिन का नल धीमें खोलेंगे। सड़े–गले सामान सही जगह पर फेकेंगे। खाना बनाने के लिए बायोगैस या कुकिंग गैस का ही उपयोग करेंगे। वर्षा का जल संचय की बात को गंभीरता से लेंगे। जरा सोचिए, इस पृथ्वी ने हमें क्या नहीं दिया है ?

धरती हमारी माता है, माता को प्रणाम करो,
बनी रहे इसकी सुंदरता, ऐसा भी कुछ काम करो।
आओ हम सब मिलजुलकर, इस धरती को स्वर्ग बना दें,
देकर सुंदर रूप धरा को, कुरूपता को दूर भगा दें।
नैतिक जिम्मेदारी समझकर, नैतिकता से काम करें
गंदगी फैलाकर भूमि पर, माँ को न बदनाम करें।
माँ तो है हम सब की रक्षक, हम इसके क्यों बन रहे भक्षक,
जन्म भूमि है पावन भूमि, बन जाओ इसके हम संरक्षक।
कुदरत ने जो दिया धरा को, उसका सब सम्मान करो,
न छेड़ो इन उपहारों को, न कोई बुराई का काम करो।
धरती हमारी माता है, माता को प्रणाम करो
बनी रहे इसकी सुंदरता, ऐसा भी कुछ काम करो।